लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ् (चाहिए)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

(ङ) कारकाणि विभक्तयश्च

संस्कृत वाक्यविज्ञान में कारकों और विभक्तियों का बहुत महत्त्व है। जब हम एक संस्कृत पद को दूसरे पद के साथ, वाक्य बनाने के लिए, जोड़ते हैं तो स्वभावतः यह प्रश्न खड़ा होता है कि उन दोनों पदों में सम्बन्ध हो सकता है या नहीं। वाक्य में क्रिया की प्रधानता होती है।

उस क्रिया के सम्पन्न होने के लिए अनेक साधनों का उपयोग होता है। इन साधनों को कारक कहा जाता है। इसलिए संस्कृत व्याकरण में क्रिया से युक्त होने वाले पदार्थों को कारक कहते हैं–**क्रियान्वयि कारकम्, क्रियासम्पादकं कारकम्।** 'पठति' क्रिया है। इसका सम्पादन करने के लिए कोई कर्त्ता (पढ़ने वाला) चाहिए। पुनः कोई कर्म चाहिए जिसे पढ़ा जाए। वह ग्रन्थ, पत्रिका या लेख हो सकता है। कोई स्थान या अधिकरण चाहिए जहाँ पढ़ा जा रहा हो। वह पुस्तकालय में, घर में या किसी यान में बैठ कर पढ़ सकता है। इसी प्रकार क्रिया के विभिन्न आवश्यक उपकरणों को कारक या साधन कहते हैं। इनकी संख्या छह है–कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण। संस्कृत में सम्बन्ध और सम्बोधन को साक्षात् क्रियोपकारक न होने से कारक नहीं कहते हैं। यद्यपि अन्य कारकों के समान इनमें भी विभक्तियाँ लगती हैं।

कारकों के लक्षण–

1. कर्त्ता – स्वतन्त्रः कर्त्ता। जो पदार्थ क्रिया के सम्पादन में स्वतन्त्र रूप से समर्थ है, इस रूप में जिसकी विवक्षा हो रही हो उसे कर्त्ता कहते हैं। जैसे बालकः धावति, वृक्षः पतति, अग्निः ज्वलति इत्यादि वाक्यों में क्रमशः बालक, वृक्ष और अग्नि स्वतंत्र रूप से क्रिया-सम्पादक है। सामान्यतः कर्त्ता चेतन होता है किन्तु अचेतन में भी कर्त्ता होने की स्थिति व्याकरण में स्वीकृत है। इसीलिए वायुः वहति, सूर्यः उदेति जैसे वाक्य होते हैं।

2. **कर्म**–कर्तुरीप्सिततमं कर्म। कर्त्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे सर्वाधिक प्राप्त करना चाहता है उसे कर्म कहते हैं। यह क्रिया के फल का आश्रय होता है। जैसे रामः ओदनं खादति। कर्म के कई भेद होते हैं। जैसे ईप्सित, अनीप्सित, अकथित, अन्यपूर्वक इत्यादि। कर्मणि द्वितीया-सूत्र से सब से द्वितीया विभक्ति होती है।

3. **करण**–साधकतमं करणम्। क्रिया के निष्पादन में जो सर्वाधिक सहायक माना जाता है उसे

करण कहा जाता है। सामान्यतः इससे तृतीया विभक्ति होती है। जैसे–कलमेन लिखति। यहाँ कलम लेखन-क्रिया के निष्पादन में सर्वाधिक सहायक है।

4. **सम्प्रदान**–कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्। कर्त्ता कर्म के द्वारा जिसे संयोजित करता है, वह सम्प्रदान है। सम्प्रदान उद्देश्य के रूप में होता है। जैसे–शिष्याय उपदेशं ददाति। उपदेश द्वारा शिष्य को कर्त्ता संयोजित करता है। शिष्य उसका उद्देश्य है।

5. **अपादान**–ध्रुवमपायेऽपादानम्। जब विच्छेद के रूप में क्रिया हो तो जहाँ से विच्छेद आरम्भ होता है (Point of Separation) उसे अपादान कहते हैं। जैसे–वृक्षात् पतति। अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।

6. **अधिकरण**–क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं। यह आधार साक्षात् नहीं अपितु परम्परा से होता है। अर्थात् क्रिया के कर्त्ता और कर्म का आधार अधिकरण होता है। जैसे–वृक्षे वानरः तिष्ठति (यहाँ कर्त्ता वानर का आधार वृक्ष अधिकरण है)। स्थाल्याम् ओदनं पचति (यहाँ कर्म ओदन का आधार स्थाली अधिकरण है)। इस कारक में सप्तमी विभक्ति लगती है।

कुछ प्रमुख सूत्र पठनीय हैं–

1. **कर्मणि द्वितीया** – कर्म कारक में सामान्य रूप से द्वितीया विभक्ति होती है यदि वह क्रिया से अनुक्त हो। इसलिए इस सूत्र का पूरा अर्थ है–अनभिहिते (अनुक्ते) कर्मणि द्वितीया। यदि कर्म उक्त हो जाए (जैसा कि कर्मवाच्य में होता है) तो इसमें प्रथमा विभक्ति ही होती है। अनुक्त कर्म के उदाहरण–माता **पुत्रं** पालयति, बालकः **चन्द्रं** पश्यति, त्वम् **ओदनं** खादसि। इन सभी उदाहरणों में कर्तृवाच्य का प्रयोग है। अतः कर्त्ता तो उक्त है किन्तु कर्म अनुक्त है। उक्त होने का अर्थ है–क्रिया को प्रभावित करना। अनुक्त कारक क्रिया के वचन और पुरुष को प्रभावित नहीं करता। उक्त कर्म का उदाहरण (उक्ते कर्मणि प्रथमा)–बालकेन **गावः** दृश्यन्ते, त्वया

रोटिका खाद्यते, अस्माभिः **ओदनः** रात्रौ न भुज्यते–इन सभी वाक्यों में कर्मवाच्य है। कर्म की प्रधानता है–उसका वचन क्रिया को प्रभावित करता है।

2. **उपान्वध्याङ्वसः**–यह कर्म कारक का सूत्र है। इसके अनुसार उप, अनु, अधि, आङ्–इन उपसर्गों के बाद वस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है (अधिकरण नहीं)। कर्मसंज्ञा होने से "कर्मणि द्वितीया" के अनुसार द्वितीया विभक्ति लगती है। जैसे–बालकः **ग्रामम्** उपवसति (बालक **गाँव में** रहता है)। मम अग्रजः **राजमार्गम्** अनुवसति (मेरे बड़े भाई **सड़क पर** रहते हैं)। सेना **शिविरम्** अधिवसति (सेना **शिविर** में रहती है)। कृष्णः **मथुराम्** आवसति (कृष्ण **मथुरा** में रहते हैं)।

3. **साधकतमं करणम्**–यह करण कारक का सूत्र है। क्रिया के निष्पादन में कर्त्ता द्वारा जिसकी सर्वाधिक सहायता ली जाए वह कारक "करण" कहलाता है। अन्य सभी सहायकों के रहने पर भी जिसके आगमन के बाद ही क्रिया की सिद्धि हो, वही करण होता है। साधकतम का यही अर्थ है–प्रकृष्टोपकारकं कारकं करणम्। जैसे–कुठारेण वृक्षं कृन्तति (कुल्हाड़ी से पेड़ काटता है)। इसी प्रकार, यानेन गच्छति, कलमेन लिखति, पादाभ्यां चलति। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।

4. **कर्तृकरणयोस्तृतीया**–अनुक्त कर्त्ता और करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। अनुक्त कर्त्ता केवल कर्मवाच्य और भाववाच्य में ही होता है, जहाँ क्रिया के वचन या पुरुष को प्रभावित करने की क्षमता उसमें नहीं रहती। जैसे–बालकेन स्थीयते (भाववाच्य), त्वया चन्द्रः दृश्यते (कर्मवाच्य), रामेण रावणः हतः (कर्मवाच्य), शिशुना सुप्यते (भाववाच्य)। इन सभी उदाहरणों में कर्त्ता अनुक्त है, अतः तृतीया विभक्ति लगी है। अनुक्त करण तो सभी वाच्यों में तृतीया ही ग्रहण करता है। जैसे–बाणेन हन्ति, हन्यते। कलमेन लिखति, लिख्यते। यानेन गच्छति, गम्यते

लोचनाभ्यां पश्यति, दृश्यते ।

5. **सहयुक्तेऽप्रधाने**–यह तृतीया विभक्ति का सूत्र है । सह (साथ) या इसके अर्थवाले सार्धम् साकम्, समम् का प्रयोग होने पर अथवा इनका अर्थ ज्ञात होने पर अप्रधान शब्द से तृतीय विभक्ति लगती ह । क्रिया से सीधा जुड़ा रहने वाला प्रधान शब्द होता है । उसके साथ अप्रधा शब्द भी रह सकता है । जैसे–सीतया सह रामः गच्छति । यहाँ गच्छति क्रिया में राम प्रधान है कर्त्ता है । सह के योग से अप्रधान सीता से तृतीया हुई है । इसी प्रकार, पयसा ओदनं खादति यहाँ सह का प्रयोग नहीं है किन्तु ओदन के साथ अप्रधान वस्तु के रूप में पयस् जुड़ा हुआ है इसलिए तृतीया हुई है ।

6. **येनाङ्गविकारः**–जिस एक अंग की विकृति से पूरे अंगधारी की विकृति लक्षित हो, उसे को विशेषण दिया जाए, तो अंग वाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है । जैसे–पादेन खञ्जः (पै से लँगड़ा) । विकार एक अंग में है किन्तु खञ्ज अंगधारी को कहा जाता है । यदि पैर को ह खञ्ज कहें तो वह अभिहित होने से प्रथमा विभक्ति ग्रहण करेगा–पादः खञ्जः अस्य । अन्य उदाहरण–चक्षुषा काणः (किन्तु, काणं चक्षुः अस्य) । शिरसा खल्वाटः (किन्तु, खल्वाटं शिर अस्य) ।

(च) समासानां सामान्यपरिचयः

दो या उससे अधिक पदों को एक साथ रखना (सम्+असनम्) समास कहलाता है । यद्यपि वाक्य में भो ऐसा होता है किन्तु वहाँ सभी पद पृथक् रहते हैं । समास में वे पद एकात्मक हो जाते हैं । उनकी विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं । इसिलिए समास की परिभाषा है–**बहूनां पदानाम् एकपदीभावः समासः** । अनेक पदों का एकपद के रूप में बदल जाना समास है । सूर्यस्य उदयः – इस अभिव्यक्ति में दो पद हैं । समास हो जाने पर "सूर्योदयः" एक ही पद बन गया । यहाँ समास है ।